सं भोविव एफव्डी 178-87/31372.—च्कि हरियाणा के राज्यवाल की राए है कि मैं व प्रकाश एग्रो इण्डस्ट्रीज प्लाट 311/24, फरीदावाद, के श्रमिक श्री संत लाल डांग, पुत्न श्री बाबू राम जी दास, मकान नं 3154, मोरी गेंट, राम वाजार, गली सूई वाली, देहली-110006, तथा प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले के संबन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है:

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायितर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है;

इसलिए, ग्रव औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यवाल इस के द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7क के अधीन गठित ओद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा धिमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है ज्यायिन ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायिन ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायिन ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायिन ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायिन ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायिन ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायिन ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायिन ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायिन ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायिन ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायिन ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायिन ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायिन ज्यायिन विवाद से सुसंगति स्वाद से सुसंगति स्वाद से सुसंगति स्वाद स्वाद से सुसंगति से सुसंगति से सुसंगति स्वाद से सुसंगति स्वाद से सुसंगति सुसंगति से सुसंगति से सुसंगति से सुसंगति से सुसंगति से सुसंगति सुसंगति से सुसंगति सुसंगति से सुसंगति से सुसंगति सुसंगति से सुसंगति से सुसंगति से सुसंगति से सुसंगति से सुसंगति सुसंगति सुसंगति से सुसंगति सुसंगति सुसंगति सुसंगति से सुसंगति सुसंगति सुसंगति से सुसंगति स

क्या श्री संत लाल डांग की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 10 ग्रगस्त, 1987

सं० थ्रो० वि०/भिवानी/71-87/31471--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० मैंनेजिंग डायरेक्टर दी हरियाणा स्टेंट फेंडरेशन ग्राफ कन्जूमर्ज कोपरेटिन होलसेल स्टोरज लि०, एस० सा० थ्रो० नं० 1014-15, सैक्टर 22, बी चण्डीगढ़, के श्रमिक श्री प्रेम सिंह, गांव उचाना खुर्द, तहसील नरवाना (जीन्द) तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रोद्योगिक विवाद श्रविनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई श्रवितयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 3(44) 84-3श्रम, दिनांक 18 मप्रैल, 1984 द्वीरा उक्त श्रिविनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्वाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से स्संगत श्रथवा संबंधित मामला है :—

वया श्री प्रेम सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० श्रो० वि०/पानी/88-87/31478 - चूंकि हरियाणा के राज्यपान की राव है कि दी इसराना प्राईमरी कोपरेटिव लेप्ड डिब्लोपमैन्ट बैंक लिं०, इसराना (करनाल) के धरिन श्री महेन्द्र सिंह, पुत्र श्री मामन सिंह, गांव तितरी खेड़ा डा० महम, जिला रोहतक तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाव लिखित मामने में कोई श्रीक्रोगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यनाल इस के द्वारा सरकारी अधिमूचना सं 3(44) 84-3 श्रम, दिनांक 18 अर्थन, 1984 द्वारा उक्त अधिसूचना को धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादशस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा पामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादसस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथना सम्बन्धित मामला है :--

क्या भी महेन्द्र सिंह की सेवाओं का समागन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० थो० वि०/पानी/84-87/31485.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि दी कुराना सहकारी ऋण एवं सेवा समिति लि०, कुराना, तहसीत पानीनत, जिशा करनाल के श्रीमिक श्री अर्न सिंह, पुत्र भी राम कि इन, प्राम कुराना, सहसील पानीपत, जिला करनाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

धौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 3(44)84-3 श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद मे सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री धर्म सिंह की सेवाथ्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है;

सं० ग्रो० वि०/कुरु/40-87/31492.—चंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि दो खेड़ी राय वाली सहकारी ऋण एवं सेवा समिति लि०, डा० बरोट, तहसील पुण्डरी (कुरुक्षेत्र) के श्रमिक श्री महेन्द्र सिंह, पुत्र श्री मुलतान सिंह मार्फत श्री पवन कुमार होटल डी मेट्रोपोल, ग्रम्बाला छावनी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिए, अब, ग्रोद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 3(44)84-3 श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनण्य एवं पंचाट तीन मास में देने हुेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथबा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री महेन्द्र सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि | कुरु | 21-87 | 31498 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० (1) मैनेजिंग डायरेक्टर, हरियाणा टूरिजम कारपोरेशन लि०, चण्डीगढ़, (2) मैनेजर, पैराकीट (हरियाणा पर्यंकट), पिपली (कुरुक्षेत्र) के श्रमिक श्री गुरमुख सिंह, पुत्र श्री राम किशन, बाल्मिक मोहल्ला, पिपली (कुरुक्षेत) तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं,

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3(44)84—3श्रम, दिनांक 18 श्रप्रल, 1984, द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला; को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिवर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित है:—

क्याश्री गुरमुख सिंह, पुत्र श्री राम किशन की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं ही गैर-हाजिर हो कर नौकरी से (लियन) खोया है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो. वि /कुरु / 38-87/31525.--चू कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० मारकण्डा वनस्पति मिल्ज लि० शाहवाद, मारकण्डा, के श्रमिक श्री भोज प्रसाद मार्फत श्री मधु सुदन शरण कौशिश, लठमारन स्ट्रीट, जगाधरी (ग्रम्बाला) तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इस के बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यवाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते है;

इसलिये, श्रव, श्रोद्योगिक विवाद श्रीधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्तंथा उससे सम्बन्धित नीचें लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री भोज प्रसाद की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?